कक्षा-दसवी हिंदी पाठ्क्रम 'अ'
प्रश्न-पत्र प्रारूप 2008

प्रश्नों के प्रकार	खंड 'क' अपठित बोध	खंड 'ख' रचना	खंड 'ग' व्यावहारिक व्याकरण	खंड 'घ' पाठ्य-पुस्तकें	विशेष टिप्पणी
अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश 2(2) काव्यांश 2(2)		क्रिया पद 3(3) अव्यय 3(3) वाक्य 3(3) वाच्य (3) समास 2(1) अनेकार्थी 1(1)	काव्य सराहना 5(5)	भाव-ग्रहण योग्यता भाव-ग्रहण योग्यता अवबोध और प्रयोग अवबोध और प्रयोग अवबोध और प्रयोग अवबोध और प्रयोग अवबोध और प्रयोग पठन-योग्यता अभिव्यक्ति, अवबोध भाव-ग्रहण योग्यता
लघूत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश 10(5) काव्यांश 6(3)			काव्यांश पर प्रश्न6(3) कविताओं की विषयवस्तु/जीवन मूल्य/संदेश पर प्रश्न 9(3) गद्यांश पर प्रश्न 6(3) गद्य पाठों पर विषयवस्तु/अनुमान/तर्क/विश्लेषणत्मक प्रश्न 9(3) पाठों के विचार/संदेश आदि पर प्रश्न 5(2) पूरक पुस्तक की विषयवस्तु पर प्रश्न 6(3)	भाव-ग्रहण योग्यता भाव-ग्रहण योग्यता अवबोध और प्रयोग अवबोध, लेखन और अभिव्यक्ति अवबोध, लेखन और अभिव्यक्ति, भाव-ग्रहण अवबोध, लेखन और अभिव्यक्ति अवबोध, लेखन, अभिव्यक्ति अवबोध, लेखन, अभिव्यक्ति
निबंधात्मक/दीर्घोत्तर प्रश्न		निबंध 10(1) पत्र 5(1)		कृतिका के पाठों पर 4(1)	लेखन और अभिव्यक्ति अवबोध, लेखन और अभिव्यक्ति अवबोध, लेखन और अभिव्यक्ति

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1

कक्षा-दसवी

हिंदी पाठ्यक्रम- 'अ'

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
1.	**नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को झीखने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी ही का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है - 'ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं।' मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुःख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। डॉक्टर हस्फलेंड ने एक पुस्तक में आयु बढ़ाने का उपाय लिखा है। वह लिखता है कि हँसी बहुत उत्तम चीज़ पाचन के लिए है, इससे अच्छी औषधि और नहीं है। एक रोगी ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है। हँसी शरीर के स्वास्थ्य का शुभ संवाद देने वाली है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन-शक्ति बढ़ाती है, रक्त को चलाती और अधिक पसीना लाती है। हँसी एक शक्तिशाली दवा है। एक डॉक्टर कहता है कि वह जीवन की मीठी मदिरा है। डॉक्टर ह्यूंड कहता है कि आनंद से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कारलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ, तुम से कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी। एक बूढ़े को हँसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हँसाओ, उसके स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा। पर हमारे जीवन का उद्देश्य	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	केवल हँसी ही नहीं है, हमको बहुत काम करने हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आंतरिक हँसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान ने दी है। हँसी सबको भली लगती है। मित्र-मंडली में हँसी विशेषकर प्रिय लगती है। जो मनुष्य हँसते नहीं उनसे ईश्वर बचावे। जहाँ तक बने हँसी से आनंद प्राप्त करो। प्रसन्न लोग कोई बुरी बात नहीं करते। हँसी बैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी है। हँसी स्वभाव को अच्छा करती है। जी बहलाती है और बुद्धि को निर्मल करती है।	
प्र.	I) हँसी भीतरी आनंद को कैसे प्रकट करती है?	2
	II) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्त्व क्यों दिया?	2
	III) हँसी को एक शक्तिशाली इंजन की तरह क्यों माना गया है?	1
	IV) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है?	1
	V) इस गद्यांश में हँसी का क्या महत्त्व बताया गया है?	2
	VI) हँसी सभी के लिए उपयोगी किस प्रकार है?	1
	VII) इस गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
	VIII) 'मित्र-मंडली' का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए।	1
	IX) 'प्रफुल्लित' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय अलग कीजिए।	1
2.	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** मानना चाहता है आज ही? तो मान ले त्योहार का दिन आज ही होगा। उमंगे यों अकारण ही नहीं उठतीं; न अनदेखे इशारों पर, कभी यों नाचता है मन। खुले-से लग रहे हैं द्वार मन्दिर के? बढ़ा पग- मूर्ति केश्रृंगार का दिन आज ही होगा। न जाने आज क्यों जी चाहता है स्वर मिलाकर अनसुने स्वर में किसी के	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	कर उठे जयकार। न जाने क्यों बिना पाये हुए ही दान, याचक मन विकल है व्यक्त करने के लिए आभार। कोई तो, कहीं तो, प्रेरणा का स्रोत होगा ही, उमंगे यों अकारण ही नहीं उठतीं, नदी में बाढ़ आयी है, कहीं पानी गिरा होगा।	
	(i) कवि ने आज ही त्योहार मनाने के लिए क्या शर्त रखी है और उसके लिए क्या तर्क दिया?	2
	(ii) कवि ने इन पंक्तियों में क्या प्रेरणा दी है?	2
	(iii) कवि ने मन में उठती भावनाओं और संकल्पों के उठने का क्या अज्ञात कारण बताया?	2
	(iv) भाव स्पष्ट कीजिए– नदी मे बाढ़ आयी है, कहीं पानी गिरा होगा।	2
	अथवा	
	अरे चाटते जूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को उस दिन सोचा: क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनिया–भर को? यह भी सोचा: क्यों न टेंटुआ घोंटा जाय स्वयं जगपति का? जिसने अपने ही स्वरूप को दिया इस घृणित विकृति का। जगपति कहाँ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी; वरना समता–संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी? छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगत्पति तू है, तू यदि जूठे पत्ते चाटे, तो मुझ पर लानत है, थू है! ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम, अरे चिरदोहित, तू अखण्ड भण्डार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा–सम्मोहित, प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल–थल भर दे, अनाचार के अम्बारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
(i)	कवि ने ऐसा क्या देखा कि उसके मन में उथल-पुथल मच गई और फिर उसके मन में क्या विचार आया?	2
(ii)	कवि को ईश्वर से क्या शिकायत है?	2
(iii)	कवि मनुष्य को किस प्रकार जाग्रत करने का प्रयास करता है?	2
(iv)	'ढेर' और 'सहारा' के लिए प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-कौन से शब्द आए हैं?	2)
	खण्ड 'ख'	
3.	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-**	10
क)	आज महानगर में बढ़ता प्रदूषण आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है जिसके कारण आपको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका उल्लेख करते हुए बताइए कि बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने में प्रत्येक नागरिक की क्या भूमिका हो सकती है?	
ख)	आपने हाल ही में कोई फिल्म देखी होगी। वह फिल्म आपको कैसी लगी? उसका कथानक, घटनाएँ दृश्य, पात्र और संवाद कैसे लगे? उस फिल्म की कौन-सी बात वास्तविक जीवन के निकट है? आपको उससे क्या प्रेरणा मिली?	
ग)	आपने कुछ दिन पूर्व एक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखा, उस कार्यक्रम की विशेष प्रस्तुति का आँखों देखा वर्णन करते हुए अपने अनुभव को शब्दबद्ध कीजिए।	
4.	आप विद्यालय की हिंदी परिषद के मंत्री है। परिषद ने तुलसी-जयंती मानने का निर्णय किया है। उसकी अध्यक्षता के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।	5
	अथवा	
	सूचना और संचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण पत्र-लेखन पीछे छूट गया है। पत्र-लेखन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।	
	खंड 'ग'	
5.	**क्रिया पद छाँटकर भेद लिखिए-**	3
	i) सुरेश बच्चे को सुला रहा है। ii) वह प्रतिदिन कई मिलोमीटर दौड़ता है। iii) विक्रम उपन्यास पढ़ता है।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
6.	**नीचे दिए गए वाक्यों में अव्यय पदों का प्रयोग कीजिए और यह भी बताइए कि वे अव्यय के किस भेद में आते हैं-** i) हमें अपनी सभ्यता ....संस्कृति पर गर्व है। ii) वह जल्दी चला गया .... ट्रेन पकड़ सके। iii) .... बोलो, कोई सुन लेगा।	3
7.	**नीचे दिए गए वाक्यों में से आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए-** i) जहाँ तुम रहते हो, वहाँ सफाई है। ii) वह लड़की जिसने प्रथम पुरस्कार जीता था, मेरी बहन है। iii) मैं जानता हूँ कि वह झूठा है।	3
8.	**निर्देशानुसार वाच्य बदलिए-** i) सोहन सिनेमा नहीं देखता। (कर्मवाच्य में) ii) अमित से दौड़ा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में) iii) मैं अब नहीं चल सकता। (भाववाच्य में)	3
9.	**(क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित सामासिक पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए-** i) वह <u>प्रतिदिन</u> कक्षा में उपस्थित रहता है। ii) जीवन में <u>सुख-दुख</u> आते ही रहते हैं।	2
	(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक के दो विभिन्न अर्थ वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए- ग्रहण, कुल	1
	खंड 'घ'	
10.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** क) ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी। अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी। पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी। ज्यौं जल माह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी। प्रीति नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी। 'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	प्रश्न–	
	i) उद्धव के मन में अनुराग नहीं है, फिर भी गोपियाँ उन्हें बड़भागी क्यों कहती है?	2
	ii) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस–किस से की गई है?	1
	iii) अंतिम पंक्ति में गोपियों ने स्वयं को 'अबला' और 'भोली' क्यों कहा है?	1
	iv) इस पद में अप्रत्यक्ष रूप से उद्धव को क्या समझाया गया है?	2
	ख. तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान मृतक में डाल देगी जान धूलि–धूसर तुम्हारे ये गात.... छोड़कर तालाब मेरी झोंपडी में खिल रहे जलजात परस पाकर तुम्हारा ही प्राण, पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?	
प्रश्न	i) बच्चे की मुसकान मृतक में भी जान कैसे डाल देती है?	2
	ii) कवि के अनुसार शिशु के स्पर्श से क्या–क्या परिवर्तन हुए?	2
	iii) ''छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?'' - इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।	2
11.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए–** (3+3+3)	9
	क) 'फसल' कविता में फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?	
	ख) आपके विचार में माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना? 'कन्यादान' कविता के आधार पर बताइए।	
	ग) 'संगतकार' कविता मे कवि संगतकार के माध्यम से किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?	
	घ) ''क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर?'' कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर भी उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। क्या आप ऐसा मानते हैं, तर्क सहित लिखिए।	
12.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से <u>किसी एक</u> को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**	
	क) लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु। बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।	
	i) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन–सी है?	1
	ii) ये पंक्तियाँ कौन - से छंद में लिखी गई हैं?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	iii) दूसरी पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?	1
	iv) इन पंक्तियों के माध्यम से राम के मन का कौन-सा भाव व्यक्त हुआ?	1
	v) प्रस्तुत पंक्तियों से दो तद्भव शब्द छाँटकर लिखिए।	1
	ख) बादल, गरजो!- घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ! ललित ललित, काले घुँघराले, बाल कल्पना के-से पाले, विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले! वज्र छिपा, नूतन कविता फिर भर दो- बादल, गरजो!	
	(i) 'धाराधर' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?	1
	(ii) 'घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!' इस पंक्ति में उत्पन्न ध्वन्यात्मक प्रभाव को क्या कहते हैं?	1
	(iii) प्रस्तुत गीत किस प्रकार का है?	1
	(iv) यह कविता किस युग की है?	1
	(v) 'घेर घेर घोर गगना, धाराधर ओ' में कौन-सा अलंकार है?	1
13.	**निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	
	क) काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित! काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य-विश्वनाथ हैं। काशी में बिसिमल्ला खाँ हैं। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, विद्याधरी हैं, बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहज़ीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव हैं, अपना गम। अपना सेहरा-बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।	
	प्रश्न -	
	(i) काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?	2
	(ii) 'यह एक अलग काशी है' - लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?	2
	(iii) काशी में सब कुछ एकाकार कैसे हो गया है?	2

प्र.सं.		प्रश्न	अंक
	ख)	पेट भरने और तन ढकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है, जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।	
	प्रश्न -		
	(i)	पेट भरने और तन ढकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी क्यों नहीं है?	2
	(ii)	हमें अपनी सभ्यता का अंश कैसे आदमियों से मिलता है?	2
	(iii)	मनीषियों से मिलने वाला ज्ञान किसका परिचायक है?	2
14.		**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए -** (3+3+3)=	9
	क)	सीमा पर तैनाज फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं। कैसे? अपने जीवन और जगत से जुड़े ऐसे कार्यों का उल्लेख कीजिए।	
	ख)	मोह और प्रेम में अंतर होता है। बालगोबिन भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे?	
	ग)	फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे? 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	घ)	'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' निबंध के आधार पर लिखिए कि तब की शिक्षाप्रणाली और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्या अंतर है?	
15.	क)	मन्नू भंडारी ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेलें किंतु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चार दीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।	3
	ख)	बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?	2
16.		**निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए -**	4
	क)	सरकारी तंत्र में जार्ज पंचम की नाक लगााने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है? स्पष्ट कीजिए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ख) 'साना साना हाथ जोड़ि ....' पाठ के आधार पर बताइए कि आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह खिलवाड़ की जा रही है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?	
17.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी तीन के उत्तर दीजिए -** (2+2+2)	6
	क) 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ और उसके साथियों के जिन खेलों और खेलने की सामग्री का वर्णन है, वे आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न हैं?	
	ख) एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरूपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?	
	ग) हमारी आज़ादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी कम नहीं रहा है। 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा' नामक कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को लेखक ने किस प्रकार उभारा है?	
	घ) प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है? 'साना-साना हाथ जोड़ि....' पाठ के आधार पर बताइए।	

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2

कक्षा-दसवीं

हिंदी पाठ्यक्रम- 'अ'

समय: 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
1.	**नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	
	आत्मनिर्भरता का अर्थ है-अपने ऊपर निर्भर रहना, जो व्यक्ति दूसरे के मुँह को नहीं ताकते वे ही आत्मनिर्भर होते हैं। वस्तुत: आत्मविश्वास के बल पर कार्य करते रहना आत्मनिर्भरता है। आत्मनिर्भरता का अर्थ है-समाज, निज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र में आत्मविश्वास की भावना, आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। स्वावलंबन जीवन की सफलता की पहली सीढ़ी है। सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वावलंबी अवश्य होना चाहिए। स्वावलंबन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में सर्वांगीण सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। स्वावलंबन जीवन का अमूल्य आभूषण है वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है। सर्वांगीण उन्नति का आधार है।	
	जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमें आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वावलंबी मनुष्य के सामने कोई-भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुँह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है। सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है। जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा? परंतु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा। वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा। मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है। सबसे बड़ा गुण भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।	
	आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। स्वावलंबी मनुष्य को अपने आप पर विश्वास होता है जिससे वह किसी के भी कहने में नहीं आ सकता। यदि हमें कोई काम सुधारना है तो हमें किसी के अधीन नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे स्वयं करना चाहिए। एकलव्य स्वयं के प्रयास से धनुर्विद्या में प्रवीण बना। निपट, दरिद्र विद्यार्थी लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने, साधारण से परिवार में जनमे ज़ैल सिंह स्वावलंबन के सहारे ही भारत के राष्ट्रपति बने। जिस प्रकार अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाते हैं, सूक्ति भाषा को चमत्कृत करती है, गहने नारी का सौंदर्य बढ़ाते हैं, उसी प्रकार आत्मनिर्भरता मानव में अनेक गुणों की प्रतिष्ठा करती है।	
	(i) 'आत्मनिर्भर व्यक्ति' से आप क्या समझते हैं?	2
	(ii) सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है।' कैसे?	2
	(iii) एकलव्य और लाल बहादुर शास्त्री के उदाहरण लेखक ने किस संदर्भ में दिए हैं?	2

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(iv) आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ किस प्रकार बनाती है?	2
	(v) 'आत्म' शब्द में 'निर्भरता' जोड़कर 'आत्मनिर्भरता' बना। इसी प्रकार 'आत्म' में कुछ अन्य शब्द जोड़कर दो शब्द बनाइए। ध्यान रहे कि वे शब्द उपर्युक्त अनुच्छेद में न हों।	1
	(vi) 'सफल' और 'कोशिश' शब्दों के लिए अनुच्छेद में प्रयुक्त किए गए शब्दों को छाँटकर लिखिए।	2
	(vii) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
2.	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**	
	दो हज़ार मन गेहूँ आया दस गाँवों के नाम राधे चक्कर लगा काटने, सुबह हो गई शाम सौदा पटा बड़ी मुश्किल से, पिघले नेताराम पूजा पाकर साध गए चुप्पी हाकिम हुक्काम भारत-सेवक जी को था अपनी सेवा से काम खुला चोर बाज़ार, बढ़ा चोकर चूनी का दाम भीतर झुरा गई ठठरी, बाहरी झुलसी चाम भूखी जनता की ख़ातिर आज़ादी हुई हराम	
	(संकेत - उपर्युक्त पंक्तियाँ अकाल के बाद लिखी गई थीं)	
	(i) 'गेहूँ' कहाँ से और किनके लिए आया होगा और क्यों?	2
	(ii) आम आदमी को अनाज पाने के लिए क्या-क्या पापड़ बेलने पड़े?	2
	(iii) भाव स्पष्ट कीजिए - पूजा पाकर .... सेवा से काम।	2
	(iv) 'मन' शब्द को अपने वाक्य/वाक्यों में इस प्रकार प्रयुक्त कीजिए कि उसके दो भिन्न अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।	1
	(v) 'भीतर झुरा गई ठठरी' से कवि का क्या अभिप्राय है?	1
	अथवा	
	आज जीत की रात पहरुए, सावधान रहना खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना प्रथम चरण है नये स्वर्ग का	

प्र.सं.	प्रश्न		अंक
		है मंज़िल का छोर इस जन-मंथन से उठ आई पहली रतन हिलोर अभी शेष है पूरी होना जीवन मुक्ता डोर क्योंकि नहीं मिट पाई दुख की विगत साँवली कोर ले युग की पतवार बने अंबुधि महान रहना पहरुए, सावधान रहना ऊँची हुई मशाल हमारी आगे कठिन डगर है शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है शोषण से मृत है समाज कमज़ोर हमारा घर है किन्तु आ रही नई ज़िन्दगी यह विश्वास अमर है	
	(i)	प्रस्तुत पंक्तियाँ देश की कौन-सी बड़ी सुखद घटना की ओर संकेत करती हैं?	1
	(ii)	कवि 'पहरुए' को 'दीपक' और 'अंबुधि' के समान बने रहने को क्यों कहता है?	2
	(iii)	भाव स्पष्ट कीजिए - 'क्योंकि नहीं मिट .... साँवली कोर।'	2
	(iv)	कवि को कौन-कौन सी बातें भयभीत कर रही हैं?	2
	(v)	कवि का आशावादी स्वर किन पंक्तियों में मुखरित हुआ है?	1
		खंड 'ख'	
3.	**निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए -**		10
	(क)	कंप्यूटर और टी.वी. ने आपके जीवन को प्रभावित किया है। उसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है। दोनों पक्षों का विवरण देते हुए आप नकारात्मक प्रभाव से बचने के सुझाव भी दीजिए।	
	(ख)	आप अपने सहपाठियों के साथ किसी पर्वतारोहण के लिए गए थे। वहाँ के रोमांचक अनुभव को शब्दबद्ध कीजिए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ग) आपको किसी मैच को देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस मैच में भारत की शानदार विजय हुई। मैच का आँखों देखा वर्णन करते हुए अपने अनुभव को अभिव्यक्त कीजिए।	
4.	श्री दिनेश डी.आर. डिस्ट्रीब्यूटर कंपनी के प्रबंधक हैं। उन्होंने अपने पैड पर कुछ नोट्स लिखे हैं, जिनमें विश्वनाथ माहेश्वरी को साक्षात्कार के लिए बुलाना है। वे अपने व्यक्तिगत सहायक को पत्र लिखने का आदेश देते हैं। दी गई सूचनाओं के आधार पर पत्र लिखिए– **नोट्स** माहेश्वरी साक्षात्कार के लिए चयन – 15/7 प्रात: 9:30 बजे कमरा नं. 124 सभी प्रमाणपत्र और दो फोटो टी.ए./डी.ए. कंपनी के नियमानुसार **अथवा** सैफ का सर्टिफिकेट का बैग कहीं छूट गया था जो 55 पंत नगर, जयपुर निवासी नीलम को मिला। यह बैग उन्होंने सैफ तक पहुँचाया। अब आप सैफ की तरफ से उस अपरिचिता को पत्र लिखिए। **खण्ड 'ग'**	
5.	**क्रिया पद छाँटकर भेद लिखिए –** (1×3) (i) पक्षी आकाश में उड़ रहे थे। (ii) माली ने पके-पके आम तोड़े। (iii) सृष्टि समाचार-पत्र पढ़ती है।	3
6.	(i) समुच्चय बोधक अव्यय छाँटिए – (1×3) नंदिता और विजया पुस्तक मेले में गई हैं। (ii) क्रिया-विशेषण छाँटकर उसका भेद भी लिखिए – हमें सबसे प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। (iii) किन्हीं दो निपातों को अपने वाक्य में प्रयुक्त कीजिए।	3
7.	**आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए –** (1×3) (i) मेरा यह सोचना कि विपुल प्रतिभाशाली छात्र है, सही निकला। (ii) हालाँकि वह सबसे छोटा था, उसने सबसे मधुर गाया।	3

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(iii) जो व्यक्ति कर्मठ होता है वह सभी जगह आदर पाता है।	
8.	वाच्य बदलकर लिखिए – (1×3) (i) बीमारी के कारण वह उठ नहीं सकती। (ii) सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च किए। (iii) आज बच्चों द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए।	3
9.	(i) किन्हीं <u>दो</u> सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए – (2+1) श्वेतांबरा, यथासंभव, नीलगगन। (ii) <u>दो-दो</u> अनेकार्थी लिखिए – पत्र, कुल।	3
	खंड 'घ'	
10.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी <u>एक को</u> पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –**	
	(क) लखन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।। का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।। छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।। बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।। बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।। बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।। भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।। सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।। मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर। गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।	
	(i) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?	2
	(ii) प्रस्तुत पद्यांश के आधार पर लिखिए कि परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा?	2
	(iii) परशुराम से लक्ष्मण को धमकाते हुए क्या कहा?	2
	(ख) छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना। यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया; जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया। प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है, हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है। जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(i) भाव स्पष्ट कीजिए –	2
	'प्रभुता का शरण बिंब.................रात कृष्णा हैं।	
	(ii) कवि ने 'छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?	2
	(iii) कठिन यथार्थ को पूजने से कवि का क्या अभिप्राय है?	2
11.	**निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (3+3+3)	9
	(क) अपनी पाठ्य-पुस्तक में संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।	
	(ख) कवि जयशंकर प्रसाद ने आत्मकथा न लिखने के लिए कौन-कौन से कारण गिनाए हैं?	
	(ग) 'कन्यादान' शब्द द्वारा वर्तमान समय में कन्या के दान की बात करना कहाँ तक उचित है?	
	(घ) सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तो उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?	
12.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –**	
	(क) विकल विकल, उन्मन थे उन्मन विश्व के निदाघ के सकल जन, आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन! तप्त धरा, जल से फिर शीतल कर दो- बादल, गरजो!	
	(i) 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन' इस पंक्ति में जो ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हुआ है उसे क्या कहते हैं?	1
	(ii) बादल को कवि गरजने के लिए ही क्यों कहता है?	1
	(iii) यह गीत किस प्रकार का है?	1
	(iv) यह किस युग की कविता है?	1
	(v) इन पंक्तियों की भाषा कौन-सी और कैसी है?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ख) पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई। सााँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई। माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई। जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई।।	
	(i) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन-सी है?	1
	(ii) यह पंक्तियाँ कौन से छंद में हैं?	1
	(iii) 'कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई' में कौन-सा अलंकार है?	1
	(iv) 'जग-मंदिर-दीपक' में कौन-सा अलंकार है?	1
	(v) इन पंक्तियों में कवि ने किसका वर्णन किया है?	1
13.	**निम्नलिखित गद्यांशों में से <u>किसी एक</u> को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	
	(क) मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?	
	(i) आशय स्पष्ट कीजिए - मानव की जो .... असंस्कृति?	2
	(ii) आज मानव ने आत्म-विनाश के कौन-कौन से साधन जुटा लिए हैं?	2
	(iii) लेखक किस बात से भयभीत है? आप उसके भय को दूर करने के लिए क्या सुझाव देंगे?	
	(ख) जो लोग यह कहते हैं कि पुराने ज़माने में यहाँ स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी, वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दंडनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है-समाज की उन्नति में बाधा डालना है। 'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए।	
	(i) स्त्री शिक्षा को लेकर लेखक के क्या विचार थे?	2
	(ii) 'निरक्षर स्त्री समाज की उन्नति में बाधा है' - इस विषय में अपना मत प्रकट कीजिए।	2

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(iii) वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में संशोधन करने का अवसर आपको मिले तो आप क्या करना चाहेंगे?	2
14.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए -** (3+3+3)	9
	(क) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?	
	(ख) सनक नकारात्मक ही नहीं सकारात्मक भी होती है। सकारात्मक सनकों का उल्लेख कीजिए।	
	(ग) 'एक कहानी यह भी' के आधार पर स्वाधीनता-आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।	
	(घ) बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?	
15.	(क) 'बहुत सुंदर है मेरी जन्मभूमि - रेम्सचैपल।' फादर बुल्के ने अपनी जन्मभूमि के प्रति अपनी भावनाओं को इस पंक्ति में व्यक्त किया है। आप अपनी जन्मभूमि के बारे में क्या सोचते हैं? लिखिए।	3
	(ख) अमुक व्यक्ति 'साधु' है - यह आप किस आधार पर कहेंगे?	2
16.	**किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए -**	4
(क)	'कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। 'साना-साना हाथ जोड़ि.....' यात्रा-वृत्तांत के इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?	
	(ख) हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि से विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?	
17.	**नीचे दिए गए प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए -** (2+2+2)	6
	(क) 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?	
	(ख) आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खान-पान संबंधी आदतों का वर्णन होता है। पत्रकारिता का यह रूप युवा पीढ़ी को किस प्रकार प्रभावित करता है?	
	(ग) दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी। यह प्रेम दुलारी को देश-प्रेम तक कैसे पहुँचाता है?	
	(घ) ऐसी किसी घटना का उल्लेख कीजिए जब अपनी माता या पिता का स्नेह आपके अंतर्मन को छू गया हो।	

अंक योजना

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-1

हिन्दी पाठ्यक्रम 'अ'

कक्षा-दसवी

आवश्यक निर्देश :-

1. परीक्षक प्रश्न-पत्र के पूरे उत्तर को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
2. अंक-योजना के अनुसार प्रश्न के समस्त उत्तर-बिंदुओं को देखें और अंक-योजना में वितरित किए गए अंकों के आधार पर ही परीक्षार्थी को अंक दें।
3. उत्तर के आरंभ की कुछ अस्पष्ट अथवा गलत पंक्तियों को पढ़कर ही पूरा उत्तर बिना पढ़े ही अनायास न काट दें। उत्तर सहानुभूतिपूर्वक पढ़ा जाए।
4. यदि उत्तर परीक्षार्थी के स्तरानुसार पूरी तरह ठीक है तो उसे शत-प्रतिशत अंक दिए जाएँ।

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	खंड क	
1.	**अपठित गद्यांश बोध-**	
	(i) हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। हँसी जीवन में उल्लास, उमंग और प्रसन्नता का संचार करती है। हँसी शरीर और मन को स्वस्थ बनाती है।	2
	(ii) जिस तरह कला आनंद का संचार करती है उसी तरह हँसी भी आनंद का संचार करती है। हँसी अनेक कला-कौशलों से अच्छी है। हँसी प्रदत्त आनंद आयु को बढ़ाता है।	2
	(iii) हँसी से प्राप्त आनंद के शक्तिशाली इंजन से शोक और दुख की दीवारों को ढाया जा सकता है।	1
	(iv) हेरीक्लेस अपने दुखी और झीखने वाले स्वभाव के कारण कम जिया, जबकि डेमाक्रीटस सदैव प्रसन्न रहने के कारण 109 वर्षो तक जिया। अत: प्रसन्नता आयु को बढ़ाती है।	1
	(v) प्रसन्न व्यक्ति स्वस्थ रहता है। उसके मन में सदैव उमंग, उत्साह और उल्लास रहता है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति सदैव अपने कार्यो को कुशलता से पूरा करता है, मित्रों में लोकप्रिय होकर, अपने शत्रुओं को भी मित्र बना लेता है।	2
	(vi) हँसी सबके लिए उपयोगी है - हँसी उदास और निराश व्यक्ति में प्रसन्नता और आशा का संचार करती है, बालक के स्वास्थ्य में वृद्धि करती है, शत्रु के मन में घृणा कम करती है और वृद्ध व्यक्ति में नए जीवन का संचार करती है।	1
	(vii) हँसी-खुशी या हँसी-आनंद का स्रोत या अन्य कोई भी उपयुक्त शीर्षक	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	(viii) मित्र-मंडली = 'मित्रों की मंडली' - तत्पुरुष समास (½+½) =	1
	(ix) प्रफुल्लित = प्रफुल्ल + इत (प्रत्यय)	
2.	(i) मन में इच्छा हो तो वही त्योहार है। इच्छा के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा।(1+1)	2
	(ii) मन में कोई विचार अकारण ही नहीं आता। यदि अवसर मिले तो उत्सव मनाने से चूकना नहीं चाहिए।	2
	(iii) कार्य-कारण संबंध होता ही है। मन में कुछ भावनाएँ उठी हैं तो कोई तो वजह होगी। इस प्रेरणा के पीछे कोई आधार तो होगा।	2
	(iv) नदी में बाढ़ तभी आती है जब कहीं पर वर्षा हुई हो। यदि आज आभार व्यक्त करने के लिए मन बेचैन है तो कर देना चाहिए उसके पीछे भी कारण रहा होगा।	2
	अथवा	
	(i) मनुष्य को जूठी पत्तल चाटते देखा। उसे क्रोध आया और सारी दुनिया के विनाश का विचार आया। (1+1)	2
	(ii) ईश्वर ने शायद अपनी पहचान खो दी है। यहाँ भेद-भाव बढ़ गया है। ईश्वर गरीब-अमीर का भेद क्यों नहीं मिटाता।	2
	(iii) कवि मनुष्य को ललकारता है। भिखमंगे, पराजित, मज़लूम आदि कहकर उसके सोये हुए आत्मसम्मान को जाग्रत करता है।	2
	(iv) अंबार, आसरा। (1+1)	2
	खंड 'ख'	
3.	निबंध-लेखन	10
	भूमिका	1
	विचार बिंदुओं का विषयानुरूप विवेचन	6
	उपसंहार	1
	भाषाशैली	2
4.	पत्र-लेखन	5
	पत्र औपचारिकताओं के लिए	1½
	विषय में दी गई सूचनाओं का प्रयोग और विषयानुरूप विषय-सामग्री	2½
	शुद्ध भाषा और प्रस्तुति	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	खंड 'ग'	
5.	(i) सुला रहा है - सकर्मक क्रिया (½+½)	1
	(ii) दौड़ता है - अकर्मक क्रिया (½+½)	1
	(iii) पढ़ता है - सकर्मक क्रिया (½+½)	1
6.	(i) और - समानाधिकरण समुच्चयबोधक (½+½)	1
	(ii) ताकि - व्यधिकरण समुच्चयबोधक (½+½)	1
	(iii) धीरे - क्रिया विशेषण (½+½)	1
7.	(i) जहाँ तुम रहते हो - क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य (½+½)	1
	(ii) जिसने प्रथम पुरस्कार जीता था - विशेषण आश्रित उपवाक्य (½+½)	1
	(iii) वह झूठा है - संज्ञा आश्रित उपवाक्य (½+½)	1
8.	(i) सोहन के द्वारा सिनेमा नहीं देखा जाता है। - (कर्मवाच्य में)	1
	(ii) अमित दौड़ नहीं सकता। - (कर्तृवाच्य में)	1
	(iii) मेरे द्वारा अब और नहीं चला जा सकता। (भाव वाच्य में)	1
9.	(क) (i) प्रतिदिन - दिन-दिन (हर दिन)- अव्ययीभाव समास (½+½)	1
	(ii) सुख-दुख - सुख और दुख - द्वन्द्व समास (½+½)	1
	(ख) **ग्रहण-** उसने सारे उपहार ग्रहण कर धन्यवाद दिया।	½
	सूर्य-ग्रहण के समय दान देना पुण्यफलदायी माना जाता है।	½
	अथवा	
	कुल- मोहन का जन्म बहुत ऊँचे कुल में हुआ	
	भयंकर तूफान के बाद कुल दस व्यक्ति ही जीवित बचे।	
	खंड 'घ'	
10.	(क) (i) अनुराग न होने के कारण उन्हें किसी की विरह-वेदना भी नहीं झेलनी पड़ती है। विरह से संतप्त हृदय की पीड़ा से अनजान रहने के कारण वे 'बड़भागी' हैं।	2
	(ii) उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी में पड़े रहने वाले कमल के पत्ते से की गई है और जल में पड़ी रहने वाली तेल की उस गगरी से की है जिसमें जल घुलमिल नहीं पाता है। (½+½)	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	(iii) गोपियों ने स्वयं को 'अबला' और 'भोली' इसलिए कहा है कि वे उद्धव के की भाँति ज्ञानी नहीं है। वे बिना सोचे-समझे कृष्ण के प्रेम में मग्न हो गईं।	1
	(iv) उद्धव तुम ज्ञानी हो, नीतिज्ञ हो, प्रेम से विरक्त हो, अत: तुम्हारा योग-संदेश हमारे लिए निरर्थक है। कृष्ण-प्रेम से अनुरक्त हम गोपियों को इससे शांति नहीं मिलेगी।	2
	(ख) (i) बच्चे की मुसकान निराश या हताश व्यक्ति में भी आशा और प्रसन्नता का संचार करती है। उसे उत्साहित करती है।	2
	(ii) शिशु के स्पर्श से ही कठोर पत्थर पिघलकर जल बन गया है या कठोर व्यक्ति का हृदय पिघल जाता है और तुम्हारे स्पर्श से ही काँटेदार पेड़ों से भी शेफालिका के फूलों की वर्षा होने लगी है।	2
	(iii) शिशु का सौंदर्य ऐसा अद्‌भुत है कि स्पर्श मात्र से कठोर या रसहीन व्यक्ति के हृदय में भी रस उमड़ आता है, उसे देखकर उसका हृदय भी वात्सल्य से भर उठता है।	2
11.	कोई तीन उत्तर अपेक्षित हैं : (3+3+3)	9
	(क) फसल पैदा करने के लिए लाखों-करोड़ों किसान दिन-रात परिश्रम करते हैं। फसल बोने से तैयार होने तक की प्रक्रिया में अनेक लोगों की मेहनत और सहयोग होता है, जिससे असंख्य व्यक्ति अन्न प्राप्त कर अपनी भूख मिटाते हैं।	
	(ख) माँ स्वयं नारी होने के कारण समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं और कथित आदर्शों के बँधनों के दुख को झेल चुकी थी। उन्हीं अनुभवों के आधार पर वह कहती है कि लड़की होना पर उन दुर्बलताओं और बंधनों से मुक्त रहना, जो पीड़ा देते हैं।	
	(ग) जो किसी भी कार्य में, महत्त्वपूर्ण उपलब्धि में नायक या प्रमुख व्यक्ति का पूर्ण सहयोग देते हैं, उनके सहयोग के बिना उस कार्य की सफलता संभव नहीं होती पर वे सदैव पृष्ठभूमि में रहते हैं। वे किसी दुर्बलता के कारण नहीं अपितु मनुष्यता के कारण पीछे रहते हैं।	
	(घ) कभी-कभी जीवन के अंतिम क्षणों में भी सुख मिल जाता है तब नीरस जीवन में आनंद भर जाता है। जीवन के ढलान पर मिले सुख से जीवन में उमंग और आनंद का संचार होता है। कभी-कभी जीवन में सुख तब मिलता है जब उसको भोगने की स्थिति में ही मनुष्य नहीं रहता जैसे-आँखों की रोशनी चले जाने पर वसंत का सौंदर्य और आनंद कैसे देखा जा सकता है!	
12.	(क) (i) अवधी भाषा	1
	(ii) दोहा छंद	1
	(iii) उपमा अलंकार	1
	(iv) शांत भाव	
	(v) लखन, बचन आदि।	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	(ख) (i) बादल	1
	(ii) नाद-सौंदर्य	1
	(iii) आह्वान-गीत	1
	(iv) छायावाद युग	1
	(v) अनुप्रास अलंकार	1
13.	दो गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं -	
	(क) (i) काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है, कलाशिरोमणि यहाँ रहते हैं, यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है, यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है, यहाँ प्रकांड ज्ञाता, धर्मगुरु और कलाप्रेमियों का निवास है।	2
	(ii) काशी अलग है क्योंकि काशी की तहज़ीब, बोली, उत्सव, सुख-दुख और सेहरा-बन्ना तो अलग हैं ही साथ ही यहाँ के अपने विशिष्ट लोग भी हैं।	2
	(iii) काशी में संगीत भक्ति से, भक्ति कलाकार से, कजरी चैती से, विश्वनाथ विशालाक्षी से और बिस्मिल्ला खाँ गंगाद्वार से, मिलकर एक हो गए हैं, इन्हें अलग-अलग करके देखना संभव नहीं है।	
	(ख) (i) पेट भरने और तन ढकने पर भी मनुष्य की इच्छाएँ शांत नहीं होतीं। वह निठल्ला न बैठकर कुछ न कुछ खोज करता ही रहता है।	2
	(ii) जो व्यक्ति निठल्ले न बैठकर कुछ न कुछ करते ही रहते हैं ऐसे व्यक्ति सभ्यता को आगे बढ़ाते हैं। वे सभ्यता का अंश होते हैं और संस्कृति के वाहक भी।	2
	(iii) मनीषियों से मिलने वाला ज्ञान उनकी सहज संस्कृति के कारण ही हमें प्राप्त होता हैं। मनीषी सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहते हैं। वे कभी भी संतुष्ट होकर नहीं बैठते।	2
	14. किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं - (प्रत्येक उत्तर में तीन बिंदुओं का विस्तार अपेक्षित है) (3+3+3)	9
	(क) सीमा पर देश की रक्षा करना तो देश-प्रेम का परिचायक है ही इसके अतिरिक्त पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कार्य करना भी देश प्रेम का परिचायक है। एक अध्यापक पूर्ण निष्ठा से छात्रों को सद्गुणों और देशप्रेम का संस्कार देकर शिक्षित करता है यह भी देश-प्रेम की ही भावना है और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, देश के संसाधनों का दुरुपयोग न करना, देश के सम्मान की भावना आदि।	
	(ख) बालगोबिन भगत अपने पुत्र से बहुत प्रेम करते थे। वह कमजोर और सुस्त था इसलिए वे उसकी और अधिक देखभाल करते थे। पुत्र की मृत्यु पर भजन गाकर उत्सव मनाया	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	कि आत्मा परमात्मा से मिल गई। दूसरा वे अपनी पुत्रवधू से बहुत स्नेह करते थे परन्तु मोह नहीं इसलिए पुत्र की मृत्यु के बाद पुत्रवधू के भाई को बुलाकर उसके घर भेज दिया और उसका पुन: विवाह करने को कहा।	
	(ग) परंपरागत संन्यासी किसी के सुख-दुख से ज्यादा सरोकार नहीं रखते वे अपनी भक्ति में मस्त रहते हैं और किसी के घर आना-आना पसंद नहीं करते जबकि फादर बुल्के जिससे एक बार रिश्ता बना लेते थे उसे हमेशा निभाते थे, उन्हें अपने परिवार की चिंता रहती थी। वे सबसे मिलने जाया करते थे उनके दुख-सुख में सहभागी बनते थे।	
	(घ) तब की शिक्षा प्रणाली में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। शिक्षा गुरुओं के आश्रमों और मंदिरों में दी जाती थी। कुमारियों को नृत्य, गान, श्रृंगार आदि की विद्या दी जाती थी। आज की शिक्षा-प्रणाली में नर-नारी भेद नहीं किया जाता। सभी विषयों की शिक्षा लड़के-लड़कियों को दी जाती है और आज सहशिक्षा का भी चलन है।	
15.	(क) पहले की परिस्थितियों और आज की परिस्थितियों में काफी अंतर आ गया है। आज लड़कियाँ स्वतंत्र रूप से बाहर घूमती हैं, वे अपने मित्रों के साथ कहीं भी आने-आने में स्वतंत्र हैं। लड़कियाँ दफ्तरों में अपने सहकर्मियों के साथ मिल-जुलकर कार्य करती हैं। आज लड़के-लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ते हैं। आज लड़कियाँ घर की चारदीवारी से बाहर अपनी जगह बना रही हैं।	
	(ख) विचार, घटना और पात्रों में से किसी एक का होना कहानी के लिए अत्यावश्यक है। कहानीकार किसी विचार को मूर्त्त रूप देकर कहानी तैयार करता हैं, घटना के आधार पर कहानी का घटनाक्रम रचता है या किसी पात्र की विशेषताओं के आधार पर कहानी की रचना कर देता है।	
16.	कोई एक उत्तर अपेक्षित है-	
	(क) अंग्रेज़ी हुकुमत के समाप्त होने पर भी भारत के सरकारी तंत्र में अंग्रेज़ी शासकों और संस्कृति का प्रभाव सर्वत्र छाया हुआ है। आज विदेशी दिल-दिमाग, तौर-तरीके और रहन-सहन हिंदुस्तानियों के सिर चढ़कर बोल रहे हैं। हम विदेशी बातों को बड़ी शान से अपना रहे हैं और भारतीय संस्कृति को ठुकरा रहे हैं वस्तुत: यह मानसिकता हमारे भीतर पनपती हीन ग्रंथि को उजागर करती है।	
	(ख) आज की नई पीढ़ी प्रकृति के संरक्षण के प्रति सजग नहीं हैं, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कर रही है जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। वनों की अंधाधुंध कटाई, औद्योगिक विकास के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण का बढ़ना, टूरिस्ट स्पॉट बनाने से पर्वतीय स्थलों के प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट करना आदि, रूपों में खिलवाड़ कर रही है। इन्हें रोकने के लिए लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता और प्रकृति के प्रति प्रेम-भावना का विकास करने का कार्य करना।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
17.	किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं – (2+2+2)	6
	(क) भोलानाथ और उसके साथी टूटे घड़े, तिनके, दियासलाई, लकड़ियों, दीए और दातुन आदि अनेक चीजों से गाँव में दुकाने लगाते, घरौंदा बनाते और खेतों में फसलें तैयार करते थे जबकि आज हम क्रिकेट, फुटबॉल, बॉस्केट बॉल, कैरमबोर्ड, टेबल टेनिस और विडियो गेम आदि खेलते हैं।	
	(ख) हम लोगों को विज्ञान द्वारा मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देंगे – हम ऐसे साधन और दवाइयाँ बनाएँगे जो लाइलाज रोगों को ठीक करने के काम आएँ, प्रकृति के संरक्षण और पर्यावरण को स्वच्छ बना सकें। विनाशकारी बमों और अस्त्र-शस्त्रों को बनाने से रोकेंगे। सबको मैत्री और प्रेम-शांति का संदेश देंगे।	
	(ग) आज़ादी की लड़ाई में समाज के सभी वर्गों के साथ उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान अविस्मरणीय है। गाना गाने वाली दुलारी और टुन्नू ने अपने प्रेम को राष्ट्रोन्मुखी बना दिया और देश की आज़ादी के अनेक आन्दोलनों में अपना तन, मन व धन सब समर्पित कर दिया। टुन्नू का बलिदान और दुलारी का त्याग इसी सत्य को उजागर करता है।	
	(घ) कटाओ के हिमशिखर पूरे एशिया के जल स्तंभ हैं। प्रकृति बड़े नायाब ढंग से सर्दियों में बर्फ के रूप में जल-संग्रह कर लेती है और गर्मियों में जब पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचती है तो ये ही बर्फ शिलाएँ पिघल-पिघल कर जलधारा बनकर हमारे कंठों को तरावट पहुँचाती हैं।	

अंक-योजना

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-2

हिंदी पाठ्यक्रम-'अ'

कक्षा-दसवीं

आवश्यक निर्देश :-

1. परीक्षक प्रश्न-पत्र के पूरे उत्तर को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
2. अंक-योजना के अनुसार प्रश्न के समस्त उत्तर-बिंदुओं को देखें और अंक-योजना म
3. उत्तर सहानुभूतिपूर्वक पढ़ा जाए तथा सही बिंदुओं के लिए उपयुक्त अंक दिए जाएँ। यदि अपेक्षित उत्तर विद्यार्थी के स्तरानुसार पूरी तरह ठीक है तो शत-प्रतिशत अंक दिए जाए।
4. विद्यार्थी के तर्क को महत्त्व दिया जाए।

प्र.सं.		उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु		अंक
		खंड 'क'		
1.	(i)	जो व्यक्ति स्वयं पर निर्भर रहकर समाज और राष्ट्र की जरूरतों को पूरा करे। किसी भी बात के लिए दूसरों की मदद की अपेक्षा न करे।		2
	(ii)	स्वावलंबी मानव अपने हर कार्य को पूर्ण कर सफलता प्राप्त करेगा। सफलता स्वावलंबी व्यक्ति के कदम चूमती है।		2
	(iii)	लेखक ने इन उदाहरणों के माध्यम से बताना चाहा है कि स्वावलंबी मनुष्य अपना कर्म एकनिष्ठ होकर करता है और उसी के बल पर उसे सिद्धि प्राप्त होती है।		2
	(iv)	आत्मनिर्भर मनुष्य को अपने पर विश्वास होता है कि वह किसी के दबाव में न आकर स्वयं अपना कार्य करता है। वह किसी के समक्ष नतमस्तक नहीं होता।		2
	(v)	आत्मसंतोष, आत्मसम्मान। (अन्य कोई भी दो)	(½+½)	1
	(vi)	कामयाब, प्रयास	(1+1)	2
	(vii)	आत्मनिर्भरता या अन्य कोई भी उपयुक्त शीर्षक।		1
2.	(i)	विदेश से, ग्रामीणों के लिए, क्योंकि गाँव में लोग अकाल के कारण भूखे मर रहे थे।	(½+½+1)	2
	(ii)	सुबह से शाम तक गिड़गिड़ाना, घूस देकर अनाज पाना आदि।	(1+1)	2
	(iii)	सरकारी अफसर घूस पाकर ही अनाज देने को राज़ी हुए। ऐसी असहाय स्थिति में भी अपना स्वार्थ सिद्ध किए बिना कोई मदद को तैयार नहीं था।		2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
	(iv) कई मन गेहूँ देखकर ग्रामीणों का मन प्रसन्न हो गया।	1
	(v) हड्डियाँ तक सूख गईं। भूख के कारण लोग कमज़ोर हो गए थे।	1
	अथवा	
	(i) पंद्रह अगस्त - भारत की आज़ादी	1
	(ii) दीपक के समान दूसरों को रोशनी दो, स्वयं अंधकार में रहना सीखो। (1+1) तुम्हारे हाथ में पतवार आ गई है लेकिन अपनी मर्यादा मत छोड़ना।	2
	(iii) स्वतंत्रता तो मिल गई लेकिन उसके पीछे जो दुखदायी, कष्टपूर्ण और कठिनाइयों से भरा समय था वह अभी भी जल्दी नहीं भुलाया जा सकता। बटवारे से जो विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा है, उन्हें भी झेलना होगा।	2
	(iv) एक शत्रु तो चला गया पर कई और दुश्मन पैदा हो गए। शोषण, छुआछूत, भेद-भाव आदि अनेक दुश्मनों से भी बचना होगा। हमारी सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था भी कमज़ोर है।	2
	(v) 'किंतु आ रही नई ज़िंदगी यह विश्वास अमर है।'	1
	खंड 'ख'	
3.	निबंध-लेखन:	10
	भूमिका 1	
	विचार-बिंदुओं का विषयानुरूप विवेचन 6	
	उपसंहार 1	
	भाषा-शैली 2	
4.	पत्र-लेखन:	5
	औपचारिकताओं के लिए 1½	
	विषय में दी गई सूचनाओं का प्रयोग और विषयानुरूप विषय-सामग्री 2½	
	शुद्धभाषा और प्रस्तुति 1	
	खंड 'ग'	
5.	(i) उड़ रहे थे - अकर्मक क्रिया (½+½)	1
	(ii) तोड़े - सकर्मक क्रिया (½+½)	1
	(iii) पढ़ती है - सकर्मक क्रिया (½+½)	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु		अंक
6.	(i) और		1
	(ii) प्रेमपूर्वक-रीतिवाचक क्रिया-विशेषण	(½+½)	1
	(iii) मैं <u>भी तो</u> था। (ऐसे ही अन्य कोई भी उपयुक्त उदाहरण स्वीकार्य)	(½+½)	1
7.	(i) विपुल प्रतिभाशाली छात्र है - संज्ञा आश्रित उपवाक्य	(½+½)	1
	(ii) हालाँकि वह सबसे छोटा था - क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य	(½+½)	1
	(iii) जो व्यक्ति कर्मठ होता है - विशेषण आश्रित उपवाक्य	(½+½)	1
8.	(i) बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता।		1
	(ii) सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किए गए।		1
	(iii) आज बच्चों ने जगह-जगह पेड़ लगाए।		1
9.	श्वेत है अंबर जिसका अर्थात् सरस्वती - बहुव्रीहि समास	(½+½)	1
	जितना संभव हो - अव्ययीभाव समास	(½+½)	1
	नील है जो गगन-कर्मधारय समास	(½+½)	1
	(कोई दो उत्तर अपेक्षित)		
	पत्र-समाचार-पत्र, चिट्ठी पत्ता आदि।	(¼+¼+¼+¼)	1
	कुल - सब, वंश आदि		
	(कोई भी दो-दो अनेकार्थी अपेक्षित)		
	खंड 'घ'		
10.	(क) (i) लक्ष्मण ने कहा - सभी धनुष एक समान है फिर पुराने धनुष के टूटने पर क्या लाभ-हानि? यह तो छूते ही टूट गया अतः राम का क्या दोष?	(1+1)	2
	(ii) मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। क्षत्रिय कुल के शत्रु के रूप में विश्व भर में विख्यात हूँ। अपनी भुजा बल पर इस धरती को राजाओं से रहित कर मैंने उसे ब्राह्मणों को दान में दिया है। यह फरसा बड़ा भयानक है।		2
	(iii) अपने फरसे की ओर देखकर बोले - अरे दुष्ट! क्या तूने मेरे स्वभाव के बारे में नहीं सुना? मैं तुझे बालक जानकर नहीं मार रहा। अरे मूर्ख! तू मुझे निरा मुनि ही समझता है।		2
	(ख) (i) बड़प्पन पाने का अहसास भी एक विडंबना है, झूठा छलावा मात्र है। वास्तविकता तो यह है कि हर पूर्णिमा के पीछे एक गहरी काली अमावस्या है। अर्थात कठिन यथार्थ को समझना चाहिए।		2

प्र.सं.		उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
		(ii) 'छाया' काल्पनिक सुख है, स्मृतियाँ हैं। इन्हें याद करने से ही मन का दुख दुगुना होगा। यथार्थ से भागना व्यर्थ है, उससे निराशा ही मिलती है।	2
		(iii) कठिन यथार्थ को झेलने को तैयार रहना चाहिए। जीवन के कटु यथार्थ को स्वीकार करना चाहिए। कल्पनाएँ-सपने मनुष्य को भ्रमित ही करते हैं।	
11.	(क)	ज्ञान पर प्रेम और भक्ति की विजय दिखाई गई है। गोपियाँ ज्ञान को कड़वी ककड़ी के समान निरर्थक और अव्यावहारिक मानती हैं। उद्धव पर तीखे व्यंग्य-बाण छोड़ती हैं। वियोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण किया गया है। यह उपालंभ, वाक-वक्रता का श्रेष्ठ उदाहरण है।	3
	(ख)	प्रसाद के जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति की कथा है। कवि अपने जीवन की दुर्बलताओं और दूसरों की प्रवंचनाओं को सामने नहीं लाना चाहता। इससे किसी को सुख नहीं मिलेगा।	3
	(ग)	'कन्या' का बदलता स्वरूप। 'लड़की' आत्मनिर्भर, शिक्षित, जिसका अपना वजूद है। लिंग-भेद नहीं है। समाज में बराबरी/समानता का दर्ज़ा वह सबल है, सामर्थ्यवान है फिर दान की बात कैसे? कन्या गाय नहीं जो 'दान' की बात की जाए।	3
	(घ)	सफलता के चरम शिखर पर पहुँचते समय कई बार व्यक्ति लड़खड़ाता है पर ऐसी कठिन परिस्थिति में उसके सहयोगी आशा बंधाते हैं, ढांढस देते हैं, उसकी क्षमता से परिचित करवाते हैं निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उसकी गलतियों को अपना सहयोग देकर सुधारते हैं।	3
12.	(क)	(i) नाद-सौंदर्य।	1
		(ii) क्रांति और चेतना लाने के लिए।	1
		(iii) आह्वान गीत।	1
		(iv) छायावादी युग।	1
		(v) सरल-सहज खड़ी बोली। (½+½)	1
	(ख)	(i) ब्रजभाषा	1
		(ii) सवैया छंद	1

प्र.सं.		उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
		(iii) अनुप्रास अलंकार	1
		(iv) रूपक अलंकार	1
		(v) श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का	1
13.	(क)	(i) संस्कृति अर्थात् कल्याणकारी भावना। यही भावना मानव-कल्याण के लिए तत्पर रहती है और उपयोगी चीजों का ही आविष्कार कराती है। लेकिन जब मानव अपनी योग्यता को विनाशकारी आविष्कारों में लगाता है तब वह असंस्कृति है। परहित को छोड़ स्वार्थ के वशीभूत मानव असंस्कृति को जन्म देता है।	2
		(ii) तरह-तरह के हथियार, अस्त्र-शस्त्र, परमाणु बम। वैज्ञानिक उपलब्धियों का दुरुपयोग। प्रकृति से नाता तोड़ना।	2
		(iii) यदि मानव ने संस्कृति का कल्याणकारी भावना से संबंध विच्छेद किया तो निश्चित रूप से अनर्थ होगा। हमारा वैज्ञानिक विकास कल्याणकारी भावना को लेकर हो। हम अपनी उपलब्धियों का स्वार्थ से ऊपर उठकर सदुपयोग करें। (1+1)	2
	(ख)	(i) यदि कुछ लोग ऐसे विचार रखते हैं कि पुराने जमाने की स्त्रियाँ अशिक्षित थी तो वे अनभिज्ञ हैं। स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ नहीं होता बल्कि सामाजिक तालमेल व्यवस्थित रहता है। इस बारे में दिए जाने वाले कुतर्कों को लेखक जरा भी तूल नहीं देता।	2
		(ii) किसी भी समाज में स्त्री और पुरुष दोनों का महत्त्व है। स्त्री के पढ़ने-लिखने से समाज की उन्नति में बाधा नहीं विकास होगा। कोई भी पढ़ी-लिखी स्त्री समाज की उन्नति में बेहतर सक्रिय भूमिका निभाएगी। उसे बाधक समझना ही संकीर्ण दृष्टिकोण या स्वार्थ हो सकता है। साक्षर स्त्री तो आने वाली पीढ़ी का अच्छी तरह मार्ग-दर्शन कर सकती है।	2
		(iii) ऐसी शिक्षा प्रणाली हो जिसमें – (½+½+½+½) विद्यार्थी के सहज स्वाभाविक विकास पर बल हो। शिक्षा व्यावहारिक हो। रटकर नहीं उसमें समझने के अवसर मिलें। शिक्षा बोझ न होकर मानव विकास में सहायक हो।	2
14.	(क)	हम अपने इलाके के चौराहे पर महात्मा गांधी की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे क्योंकि वह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके आदर्शों पर चलना आज की जरूरत है। (1+2)	3

प्र.सं.		उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
		उत्तरदायित्व मूर्ति की साफ-सफाई पर ध्यान देना। उस व्यक्तित्व की जानकारी आने वाली पीढ़ी को देना। उनका जीवन कैसे सबसे अलग रहा।	
	(ख)	किसी भी विकास के लिए सकारात्मक सनक ही काम करती है। (1+1+1) देश को आजादी भी सनकी लोगों ने दिलवाई। कोई भी आविष्कार या खोज किसी की सनक का ही परिणाम होता है।	3
	(ग)	1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का जोश पूरे देश में था। 1945 में मन्नू ने अपनी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। उन दिनों प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस एवं भाषणों का दौर था और लेखिका उनमें बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। डॉ. अंबालाल ने मन्नू के भाषण की खूब तारीफ की तो पिता को भी मन्नू पर गर्व हो गया।	3
	(घ)	संगीत साधना (½+½+½+½+½+½) गंगा-जमुनी तहज़ीब सादगीपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति के उपासक लगन, निष्ठा, तल्लीनता अभिमान तो छू भी न गया। परमहंस सा व्यक्तित्व (कोई भी छह बिंदु)	3
15.	(क)	जन्मभूमि के प्रति फादर बुल्के का प्रेम झलकता है। उनकी जन्मभूमि महान है, श्रेष्ठ है, उच्च है। प्राणों से प्यारी अपनी जन्मभूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है और विश्व में उसे सर्वोच्च स्थान दिलवाएं। 1+2	3
	(ख)	बाह्य पहनावे के आधार पर ही कोई साधु नहीं होता। साधु व्यक्ति परोपकारी, निस्वार्थी, सत्य, अहिंसा, राग-द्वेष से ऊपर, निष्कपट होता है। आत्मा से जुड़ा व्यक्तित्व होता है।	2
16.	(क)	लेखिका ने हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहा है कि किसी भी देश की आर्थिक प्रगति आम जनता की कर्मठता पर निर्भर करती है। वही लोग खून-पसीना बहाकर परिश्रम करते हैं फिर भी उसके हिस्से से वंचित रहते है। सफेदपोश लोग तो केवल दिखावटी हैं आर्थिक विकास उनसे नहीं आम जनता के कंधों पर होता है। मेहनत-कश ही देश को आगे बढ़ाता है। उसका रूप कोई भी हो - चाहे वह किसान है चाहे मजदूर।	4
	(ख)	हिरोशिमा की घटना ने इंसान को पूरी तरह से हिला दिया। (1+1+1+1) विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ नहीं है, हर क्षेत्र में दिखता है -	4

प्र.सं.		उत्तर-संकेत/मूल्य बिंदु	अंक
		परमाणु शस्त्रों का निर्माण।	
		विभिन्न आधुनिक तकनीकों का दुरुपयोग जैसे कंप्यूटर पर 'नेट' का नकारात्मक प्रयोग।	
		टी.वी., ए.सी., कंप्यूटर आदि वैज्ञानिक उपलब्धियों ने बच्चों का बचपन छीन लिया। घर की चार दीवारी में कैद कर दिया।	
		मनुष्य के बीच भावनात्मक संबंध नहीं रह गए। सब मशीन हो गए जिसका परिणाम हम सब भुगत रहे हैं।	
17.	(क)	(यह उत्तर हर बच्चे का अपना अलग होगा) अभी हमारे पास सुंदर और बैटरी से चलने वाले खिलौने हैं। मनोरंजन के लिए टी.वी., कंप्यूटर, फिल्म आदि। माता-पिता का स्नेह तथाकथित सुख-सुविधाएँ जुटाने में है।	2
	(ख)	युवा पीढ़ी बिना सोचे-समझे अनुकरण की ओर दौड़ती है। (1+1) वास्तविकता से दूर छलावे में फँस जाती है। विवेक खोकर अनुचित को भी ग्रहण करती है।	2
	(ग)	दुलारी का अतिमानवीय प्रेम उसे देशप्रेम की पराकाष्ठा तक पहुँचाता है। उसके मन में व्याप्त जन्मभूमि के प्रति असीम प्रेम, विदेशी शासन के प्रति क्षोभ, आजादी की लड़ाई में उसका योगदान ही देशप्रेम तक पहुँचाता है।	2
	(घ)	(इसमें बच्चा अपनी किसी भी घटना का उल्लेख कर सकता है। जिसमें उसकी भाषा-शैली, प्रस्तुति, शब्द-चयन आदि को देखा जाएगा)	2